आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर द्वारा ग्राम नथुवाखान में वर्मी कम्पोस्टिंग एवं इसके लाभों पर ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण आयोजित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (ICAR-IVRI), मुक्तेश्वर के प्रसार शिक्षा अनुभाग द्वारा संस्थान के कार्यवाहक संयुक्त निदेशक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शेर सिंह के मार्गदर्शन में दिनांक 24 सितंबर 2026 को ग्राम नथुवाखान में किसानों के लिए "वर्मी कम्पोस्टिंग एवं इसके लाभ" विषय पर एक दिवसीय ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. मनीष तोमर द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि एवं पशुपालन से प्राप्त जैविक अवशेषों का उपयोग करते हुए वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने की वैज्ञानिक विधि, इसके कृषि उपयोग तथा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले लाभों के प्रति जागरूक करना था। किसानों को वर्मी कम्पोस्ट को गोबर की खाद (FYM) के प्रभावी जैविक विकल्प/पूरक के रूप में अपनाने तथा रासायनिक उर्वरकों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने वाली टिकाऊ कृषि पद्धति के रूप में इसके उपयोग की जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण के दौरान किसानों को वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्री, उपयुक्त स्थान, केंचुआ प्रजातियों का चयन, बेड तैयार करने की विधि, जैविक अवशेषों का उचित उपयोग, नमी एवं तापमान प्रबंधन तथा तैयार वर्मी कम्पोस्ट की पहचान एवं भंडारण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। किसानों को बताया गया कि खेत एवं पशुपालन से निकलने वाले जैविक अवशेषों को उपयोगी जैविक खाद में परिवर्तित कर कृषि में पुनः इस्तेमाल किया जा सकता है।

किसानों को वर्मी कम्पोस्ट के मृदा स्वास्थ्य पर लाभ के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि इसके उपयोग से मृदा में जैविक पदार्थ एवं पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने, मृदा की संरचना एवं जल धारण क्षमता में सुधार तथा लाभकारी सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को बढ़ावा देने में सहायता मिल सकती है। इसके साथ ही, जैविक खादों के समुचित उपयोग से रासायनिक उर्वरकों के संतुलित एवं आवश्यकता-आधारित उपयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है।

डॉ. मनीष तोमर ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पहाड़ी क्षेत्रों में उपलब्ध स्थानीय जैविक संसाधनों का उचित उपयोग कर किसान कम लागत वाली एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपना सकते हैं। उन्होंने किसानों को कृषि एवं पशुपालन से प्राप्त जैविक अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने तथा इसे अपनी फसलों में आवश्यकता के अनुसार उपयोग करने की सलाह दी।

प्रशिक्षण के दौरान किसानों के साथ व्यावहारिक चर्चा एवं प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित किया गया। किसानों ने वर्मी कम्पोस्ट बेड की स्थापना, केंचुओं की देखभाल, नमी प्रबंधन, तैयार खाद की मात्रा, फसलों में उपयोग की विधि तथा इसकी लागत से संबंधित प्रश्न पूछे, जिनका विशेषज्ञों द्वारा समाधान किया गया।

कार्यक्रम में किसानों को जैविक अवशेषों के पुनर्चक्रण, मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, रासायनिक उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग एवं टिकाऊ कृषि के महत्व के प्रति जागरूक किया गया। संस्थान द्वारा किसानों को भविष्य में भी वर्मी कम्पोस्टिंग एवं अन्य टिकाऊ कृषि तकनीकों के संबंध में तकनीकी मार्गदर्शन एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रदान करने की बात कही गई।

आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर द्वारा इस प्रकार के ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को स्थानीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग, जैविक खाद उत्पादन, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे कृषि लागत को तर्कसंगत बनाने तथा दीर्घकाल में कृषि की स्थिरता बनाए रखने में सहायता मिल सके।